श्री सिद्धरूद्रेश्वर पशुपतिनाथ महादेव पंचमुखी शिव मन्दिर, सम्भलहेरा, मुजफ्फरनगर का इतिहास

इन्टरनेट से प्राप्त जानकारी के अनुसार श्री पंचमुखी शिव मन्दिर में शिव की मूर्ति का दर्शन प्रथम बार पन्द्रवी सदी में हुआ। तभी से सभी वर्गो के भक्त अपनी मनोकामनाओ की पूर्ति हेतू श्री पंचमुखी भगवान शिव की पूजा के लिये आने लगे। सन् 1857 में श्री पंचमुखी मन्दिर का निर्माण भव्य रूप में हुआ। यह मुजफ्फरनगर जिले की एक विश्व विख्यात धरोहर है।

विश्व में प्रथम श्री पंचमुखी शिवलिंग श्री पशुपति नाथ, काठमांडू, नेपाल में है। दूसरे श्री पंचमुखी महादेव सम्भलहेरा, जानसठ–मीरापुर के बीच नहर के किनारे जिला मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) में है। जिसे सिद्धपीठ मन्दिर कहा जाता है एवं ऐसी मान्यता है कि सच्चे मन से कि गई कामनाएं यहां पूर्ण होती है। इस मन्दिर में एक ओर श्री पंचमुखी शिवलिंग सोने को तराशने वाले कसौठी पत्थर के बन है। जिसकी कीमत आंकना सम्भव नही है।

मन्दिर में लगभग 40 बीघे का बाग है। जिससे मन्दिर का आलौकिक स्वरूप बहुत सुन्दर एवं भव्य दिखाई देता है तथा हर आने वाले को अपने आंचल के अपनत्व का अहसास कराता है। जिससे भक्तजन लम्बे समय तक यहां रूकना पसन्द करते है।

इस विश्व विख्यात श्री पंचमुखी शिव मन्दिर को भक्तो के लिए संजोये रखने हेतू नई समिति का गठन हुआ। जिसने मन्दिर को पूरे विश्व में जन जागरण करने हेतू प्रचार, प्रसार एवं अन्य संसाधन जुटाने का निर्णय करा। जिसके कारण अब पूर वर्ष में लगभग 1 लाख से ज्यादा भक्त आते है। मन्दिर में भक्तो के लिये नये रास्ते, लाईट, पूजारी, पूजा, अर्चना, भण्डारा, पूजारी निवास आदि को नये ढंग से व्यवस्था की गई। साथ ही कई नये कार्य प्रस्तावित है।

सत्यप्रकाश रेशू 9837058160 मन्दिर समिति
रेशू चौक, रेशू विहार
मुजफ्फरनगर 251001 (उ0प्र0)